राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पीएच० डी० शोधोपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रारूप

(मानविकी संकाय)

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

“अद्वैत वेदांत, सांख्य-योग तथा न्याय-वैशेषिक के मोक्षतत्त्व का तुलनात्मक अध्ययन”

शोध निर्देशिका

डॉ० भारती द्विवेदी

सहायक प्राध्यापिका

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

सौमित्र नस्कर

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावना-

दार्शनिक चिंतन का प्रमुख स्रोत वेद है।भारतीय आस्तिकों का विचार बुद्धि और प्रज्ञा जो आज प्रगति के चरम पर पहुँच गया है इसके मूल में वेद है। तत्व या सत्य की खोज करना ऋषियों, मनीषियों और दार्शनिकों का उद्देश्य है। मैं कौन हूँ?मेरा जन्म इस प्रकार क्यों हुआ? प्राणियों के समस्त दुःखों का कारण क्या है?समस्त दुखों का चरम एवं पूर्ण निवारण क्या होगा? वास्तव में श्रेय क्या है ? मैं कैसे पा सकता हूँ ?मृत्यु क्या है?वास्तविक मृत्यु क्या है? क्या हम महामृत्यु को रोक सकते हैं?- आदि विभिन्न जिज्ञासाओं से दार्शनिक विचार का उदय हुआ है।सृष्टितत्व,जीवतत्व, ब्रह्मतत्त्व,ज्ञानतत्त्व और मोक्षतत्वों के बारे में मनुष्य की जो शाश्वत जिज्ञासा है उस विषय में श्रुति का सहारा लेकर विभिन्न तर्क कों साथ भारतीय मनीषियोंनें विभिन्न युक्ति तर्कों के साथ जो सिद्धांत दिया है वह सभी सिद्धांत भारतीय आस्तिक दर्शन के नाम से प्रसिद्ध हो गया है।धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार परम पुरुषार्थ हैं।ये चार पुरुषार्थ जीवन के निर्वाह के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।हालाँकि, यदि धर्म को छोड़कर अर्थ और काम की सेवा की जाती है, तो अंत में मुक्ति संभव नहीं होता है।यदि अर्थ और कर्म की सेवा धर्म के साथ मिलकर की जाए तो चौथा पुरुषार्थ रूपी मोक्ष असंभव नहीं होता है।इन प्रसिद्ध चतुर्विध पुरुषार्थों में से मोक्ष को शास्त्रकारों ने परम पुरुषार्थ माना है।व्यवहारिक जीवन में धर्म और आर्थिक सुख तथा काम सुख वास्तविक मनुष्य का पुरुषार्थ है अर्थात् वांछनीय है परन्तु सदैव दुःख से भरा रहता है, इसलिए श्रोतागण इन्हें सदैव अस्वीकार करते हैं।मोक्ष का अर्थ है बंधन से निवृत्ति।अगर मोक्ष प्राप्त हो जाए तो बंधन था ऐसा मानना होगा।अगर कोई बंधन नहीं है तो मुक्ति का कोई अर्थ भी नहीं है।जन्म है तो मृत्यु भी है,यदि जन्म ही नहीं तो मृत्यु कैसे होगा?इसलिए सभी प्रकार बंधन का अंत मोक्ष है।अर्थात सभी प्रकार दुःख और दर्द से हमेशा के लिए विनाश ही मोक्ष शब्द का अर्थ।

महोपनिषद मे कहा गया है-"**इच्छामात्रमविद्येयं तन् नाशो मोक्ष उच्यते**" अर्थात् इच्छामात्रही अविद्या,उस अविद्या का विनाश ही मोक्ष है।महाभारत मे कहा गया है- "**मूलमेतत् त्रिवर्गस्य निवृत्तिर्मोक्ष उच्यते**" अर्थात् त्रिवर्ग का विनाश ही मोक्ष। योगवाशिष्ठरामायण में कहा गया है-भोगों के त्याग को ही मुक्ति कहा है। पद्मपुराण में कहा गया है-"**कर्मणां च लयो मोक्षः सुखदुःखप्रदायिनाम्**"अर्थात् सुख और दुःख की लय को ही मुक्ति कहते हैं। गरुडपुराण में कहा गया है -"**सा मुक्तिर्ब्रह्मणा चेक्यम्**"अर्थात् व्रह्मा के साथ एकता ही मुक्ति है। चरकसंहिता में कहा गया है-"**योगे मोक्षे च सर्व्वासां वेदनानामवर्तणम् । मोक्षो निवृत्तिनिःशेषोयोगोमोक्ष-प्रवर्तकः।**"वेद में है मुक्ति का अर्थ मृत्युरूप बंधन से ही मुक्ति,अमृतसे नही। उपोनिशाद में है मृत्यु से मुक्ति, कामना से मुक्ति,शरीर से मुक्ति आदि के बारे में उल्लेख है।जन्म दुःख है,यह दुःख के आत्यन्तिक नाशको मुक्ति कहते हैं ।अतः जन्म का आत्यन्तिक विनाश ही मुक्ति है।इसका मतलब यह है कि मुक्त जीब पुनः जन्म नही लेते हैं।

आत्मा अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करती है और उन कर्मों के अनुसार ही इस संसार में जन्म लेती है और भ्रमण करती है।लेकिन जब उसे ज्ञान के माध्यम से अपनी शाश्वत और मुक्त स्वरूप का एहसास होता है, तो उसे मोक्ष प्राप्त होता है।ऋग्वेगसंहिता और यजुर्वेदसंहिता में"**त्र्यम्बकं यजामहे**"आदि मंत्र के अंत में"मृत्योर्म्मु**क्षीय मामृतात्**"-इस वाक्य से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि मुक्ति ही जीव की एकमात्र इच्छा है। क्योंकि इस वाक्य में मृत्यु सेमुक्ति की प्रार्थना का बोध होता है।

यद्यपि सभी दार्शनिकों और श्रुतियों का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, केवल प्राप्ति का मार्ग अलग अलग अधिकारियों के साथ अलग-अलग होता है,और सिद्धांत अलग अलग विचारों के साथ भिन्न होता है,जो प्रस्थान की पारस्पारिक भिन्नता का कारण है।

उद्देश्य-

१) यह जानना कि मोक्ष शब्द का क्या अर्थ है?

२) यहजाननाकिमोक्ष शब्द के विभिन्न चरणक्याहैं?

३) यहजाननाकिमोक्ष का व्याकरणिक अर्थक्यहैं?

४) मोक्ष तत्व पर अद्वैत वेदांती और सांख्य योग तथा न्याय-वैशेषिक के तुलनात्मक विचारप्रस्तुतकरना।

५) मोक्ष लाभ मृत्यु के बाद होता है या मृत्यु से पहले यह जानना।

६) यह जानना कि जीवन मुक्ति और विदेह मुक्ति क्या हैं?

७)अद्वैतवेदांतमोक्षतत्वपरविभिन्नआचार्योंकेविचारोंकेमाध्यमसेछात्रोंकामार्गदर्शनकरना।

सांख्य-योग और न्याय-वैशेषिक मोक्ष तत्व के साथ अद्वैत वेदांत के मोक्ष तत्व का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक वाला शोध लेख बहुत आवश्यक है। मोक्ष तत्व को सही अर्थों में समझने के लिए, यह जानना बहुत आवश्यक है कि वेदांत दार्शनिकों के अनुसार मोक्ष शब्द का वास्तव में क्या अर्थ है, और सांख्य-योग और न्याय-वैशेषिक दार्शनिकों के अनुसार मोक्ष का वास्तव में

क्या अर्थ है। यह जानना बहुत जरूरी है कि मोक्ष तत्व को लेकर अद्वैत वेदांत और सांख्य योग तथा न्याय वैशेषिक के बीच कोई मतभेद है या नहीं। और यह जानना जरूरी है कि इन तीनों में से कौन सा दर्शन अधिक स्वीकार्य है।यह शोध पत्र उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी होगा जो वेदांत की दुनिया में अध्ययन कर रहे हैं और मोक्ष का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं और मोक्ष का वास्तविक स्वरूप और अर्थ जानना चाहते हैं। दार्शनिक जगत् में अध्यायनरत सभी भावि विद्यार्थीयोंकी इस शोध पत्र द्वारा मार्गदर्शन होगा।

साहित्य समीक्षा--

मोक्ष तत्त्व पर चर्चा न केवल भारत में बल्कि विभिन्न देशों में भी व्यापकरूपमेंहुआ है।इसलिए मोक्ष तत्व पर कई शोध कार्य प्रकाशित हो चुके हैं।लेकिन अद्वैत वेदांत सम्मत मोक्ष तत्त्व के साथ सांख्य योग तथा न्याय वैशेषिक की मोक्षतत्त्व का कोई तुलनात्मक अध्ययन उपलब्ध नहीं है।इसलिए मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, कोलकत्ता विश्वविद्यालय आदि के शोध पत्रों का अध्ययन किया।अद्वैत वेदांत सम्मत मोक्ष तत्त्व के साथ-सांख्य योग तथा न्याय-वैशेषिक के मोक्षतत्त्व का कोई भी तुलनात्मक शोध कार्य नहीं हुया।

अनुसंधान मे उत्कृष्टता और महत्व -

अद्वैत वेदांत दर्शन के साथ सांख्य योग और न्याय वैशेषिक के तुलनात्मक अध्ययन से मोक्ष तत्व पर विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों के दार्शनिकों के विचारों को जाना जा सकता है - जो कि अत्यंत आवश्यक है। हालाँकि मोक्षतत्व पर पहले भी शोध हो चुका है, लेकिन सांख्य योग और न्याय वैशेषिक के साथ अद्वैत वेदांत का कोई तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है, इसलिए अगर मुझे यह शोध करने की अनुमति दी जाती है, तो मेरा मानना है कि बहुत सी नई जानकारी सामने आएगी।परिणामस्वरूप यह शोध पत्र हमारे वर्तमान एवं भावी जीवन में हमारा मार्गदर्शन करेगा।

१) अद्वैत वेदांत में मुक्ति या मोक्ष क्या है?

२) क्या अद्वैत वेदांत के सभी दार्शनिक मोक्ष के बारे में सहमत हैं, या वे अलग-अलग हैं?

३) मोक्ष के बारे में अद्वैत वेदांत और सांख्य योग की क्या राय है?

४) मोक्ष के बारे में अद्वैत वेदांत और न्याय वैशेषिक की क्या राय है?

५) जीवन्मुक्ति और विदेह मुक्ति के विषय में अद्वैत आचार्यगण का कथन।

प्राक् कल्पना--

इस शोध के परिचय में पुस्तक का सारांश तथा पुस्तक लिखने का मूल उद्देश्य दर्शाया जायेगा।इसके बाद वेदांत के विभिन्न संप्रदायों के प्रवर्तक

आचार्यों द्वारा प्रचारित विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख किया जाएगा।इसके बाद शोध के मुख्य विषय मोक्ष तत्व की विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणें से जांच की जाएगी।न्याय दार्शनिक गौतम के अनुसार मोक्ष के स्वरूप पर चर्चा की जायेगी।न्याय दार्शनिक गौतम के अनुसार मोक्ष के स्वरूप पर चर्चा की जायेगी, फिर सांख्य आचार्य एवं योगाचार्य के अनुसार मोक्ष तत्व पर विस्तार से चर्चा की जायेगी।वर्तमान शोध लेख से उन सभी छात्रों या उन लोगों को लाभ होने की उम्मीद है जो इस विषय पर उच्च ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

शोध प्रविधि--

अनुसंधान सत्य की खोज है।वैदिक काल से ही ज्ञान की खोज में मनुष्य सत्य की खोज में लगा रहा है।सत्य की खोज ,नए तथ्यों की खोज है ।जो उपलब्ध नहीं हैं और जो उपलब्ध है उसका समालोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन है।संस्कृत साहित्य में शोध शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है।जिनमे अनुसंधान,गवेषणा आदि शामिल है।आधुनिक अनुसंधान आलोचकों ने अनुसंधान के क्षेत्र की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए कुछ विशिष्ट प्रकार अनुसंधानों की खोज की है--

१) तुलनात्मक

२) समीक्षात्मक

३) समालोचनात्मक

४) सम्पादनात्मक

यहां अद्वैत वेदांत सम्मत मोक्ष तत्त्व के साथ सांख्य योग तथा न्याय वैशेषिक केमोक्षतत्त्व का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।विभिन्न प्रकार की विधियों में से तुलनात्मक विधि एक है।यह अनुसंधान को दुनिया के सबसे छोटे और सबसे सूक्ष्म अर्थों को प्रकट करने में सक्षम बनाता है और अनुसंधान ज्ञान को बढ़ाता है।

अध्याय विभाजन--

भूमिका-

प्रथमअध्याय--अद्वैतवेदान्तकाउद्भवऔरविकास

क)अद्वैत वेदांत का परिचय

ख) अद्वैत वेदांत के आचार्यों का परिचय

ग) वेदांत के प्रस्थानत्रय

घ) वेदांत के विभिन्न संप्रदाय

ङ) अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रस्थानत्रय

च) आचार्य शंकर के अनुसार अद्वैततत्व

छ) आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्मतत्त्व

द्वितीयअध्याय--सांख्यऔरयोगएवंन्यायवैशेषिककाउद्भवऔरविकास

क) सांख्य और योग का परिचय

ख)सांख्य एवं योग के आचार्यों का परिचय

ग) न्याय और वेशेषिक का परिचय

घ) न्याय एवं वेशेषिक के आचार्यों का परिचय

तृतीय अध्याय - मोक्ष (मुक्ति) का दार्शनिक विवेचन

क) मुक्ति क्या है

ख) मुक्ति के प्रकार

ग) मुक्ति के पर्यायवाचक शब्द

घ) बंधन क्या है

ङ) मुक्ति पर अद्वैत वेदांत के विभिन्न दार्शनिकों के विचार

चतुर्थ अध्याय-मोक्ष (मुक्ति) के दार्शनिक संसाधन

क) मोक्ष प्राप्ति की अभिव्यक्ति में आत्मज्ञान का साक्षात्कार

ख) आत्मज्ञान शब्द का स्वरूप एवं अर्थ

ग) ब्रह्मज्ञान शब्द का वास्तविक अर्थ

घ) तत्त्व ज्ञान में मोक्ष की प्राप्ति विषयक विभिन्न मतों का खण्डन कर वेदांत का स्थापना।

पञ्चम अध्याय-तुलनात्मक परिप्रेक्ष मे मोक्षतत्त्व

क) तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में अद्वैत वेदांत का मोक्षतत्त्व

ख) न्याय वैशेषिक के अनुसार मोक्ष का स्वरूप

ग) सांख्य योग के अनुसार मोक्ष का स्वरूप

घ) मोक्ष प्राप्ति के सिद्धांत पर सांख्य एवं योग मत

ङ) मोक्ष प्राप्ति के सिद्धांत पर न्याय एवं वैशेषिक मत

च) मोक्ष प्राप्ति के सिद्धांत पर अद्वैत वेदांतियों के विचार

षष्ठ अध्याय-मोक्ष के लिए भक्ति का आवश्यकता

क)मोक्ष के लिए आवश्यक भक्ति के स्वरूप एवं प्रकार

ख)भक्ति की विभिन्न भूमि

ग)भक्ति साधन तत्व के रहस्य को उन्मोचन

निष्कर्ष-

मैं इस शोध के माध्यम से यह देखना चाहता हूं कि मोक्ष या मुक्ति वास्तव में क्या है।इस मोक्ष या मुक्ति के बारे में विभिन्न दार्शनिकों की क्या राय है?क्या मोक्ष पर उनके विचार एक जैसे हैं या अलग-अलग?मोक्ष के विषय पर वेदांतियों में कोई मतभेद है या नहीं?मोक्ष के विषय में वेदान्त और सांख्य योगियों के कथन एक ही या भिन्न हैं?मोक्ष के विषय में वेदान्त और न्याय वैशेषिक का कथन एक ही या भिन्न है?आदि की सच्चाई हम जान सकते हैं।यह शोध पत्र उन लोगों के लिए बहुत उपयोगी होगा जो वेदांत की दुनिया में अध्ययन कर रहे हैं और मोक्ष

का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं और मोक्ष का वास्तविक स्वरूप और अर्थ जानना चाहते हैं। दार्शनिक जगत् में अध्यायनरत सभी भावीविद्यार्थियोंका इस शोध पत्र द्वारा मार्गदर्शन सकेगा।

परिशीलित ग्रन्थ पञ्जि -

ग्रन्थकारों का नाम	**ग्रन्थों का नाम**	**प्रकाशक**
वन्द्योपाध्याय डॉ श्री विजयभूषण	भारतीय दर्शने मुक्तिवाद	दाशगुप्त एन्ड को.लि.५४/३ कलेज स्ट्रीट,कोलकाता १२
भर्गानन्द स्वामी	पातञ्जल योगदर्शन	उद्वोधन कार्यालय
राय चौधुरी डःअनामिका	तर्कभाषा	संस्कृत वुक डिपो,२८/१,विधान सरणी,कोलकाता ७००००६
गोस्वामी श्री नारायण चन्द्र	सांख्यतत्त्व कौमुदी	संस्कृत पुस्तक भाण्डार ३८ विधान सरणी,कोल. ६

पाल विपद भञ्जन	वेदान्तसार	संस्कृत पुस्तक भाण्डार ३८ विधान सरणी कोल ६
सांख्य-वेदान्त तीर्थ पण्डित दुर्गचरण	वेदान्तदर्शन	देव साहित्य कुटीर प्राइभेट लिमिटेड
भवो घनानन्द स्वामी	सांख्यकारिका	उद्बोधन कार्यालय,कोलकाता
भर्गानन्द स्वामी	पातञ्जल योगदर्शन	उद्बोधन कार्यालय
वादरायण महर्षि	ब्रह्मसूत्र	निर्णयसागर प्रेस

- आवश्यकतानुसार परिवर्तन या संशोधन किया जा सकते हैं।